



Mr.HARSH



Ms. Vijaya

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120134901

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
22/10/1991 :	जन्म तिथि	: 02/03/1996
मंगलवार :	दिन	: शनिवार
घंटे 13:36:00 :	जन्म समय	: 17:35:00 घंटे
घटी 19:38:03 :	जन्म समय(घटी)	: 28:42:26 घटी
India :	देश	: India
Jamshedpur :	स्थान	: Kunkuri
22:47:00 उत्तर :	अक्षांश	: 22:45:00 उत्तर
86:12:00 पूर्व :	रेखांश	: 83:57:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे 00:14:48 :	स्थानिक संस्कार	: 00:05:48 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
05:44:46 :	सूर्योदय	: 06:15:00
17:14:38 :	सूर्यास्त	: 17:57:57
23:44:48 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:48:20
मकर :	लग्न	: सिंह
शनि :	लग्न लग्नाधिपति	: सूर्य
मीन :	राशि	: कर्क
गुरु :	राशि-स्वामी	: चन्द्र
रेवती :	नक्षत्र	: पुष्य
बुध :	नक्षत्र स्वामी	: शनि
2 :	चरण	: 4
हर्षण :	योग	: शोभन
वणिज :	करण	: कौलव
दो-दौलत :	जन्म नामाक्षर	: डा-डाली
तुला :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: मीन
विप्र :	वर्ण	: विप्र
जलचर :	वश्य	: जलचर
गज :	योनि	: मेष
देव :	गण	: देव
अन्त्य :	नाड़ी	: मध्य
सर्प :	वर्ग	: श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी
बुध 12वर्ष 2मा 20दि
शुक्र

12/01/2011

12/01/2031

शुक्र	13/05/2014
सूर्य	13/05/2015
चन्द्र	11/01/2017
मंगल	13/03/2018
राहु	13/03/2021
गुरु	12/11/2023
शनि	12/01/2027
बुध	11/11/2029
केतु	12/01/2031

अंश

25:16:18
04:40:42
20:24:46
10:00:37
16:53:16
14:06:35
18:38:17
06:41:40
19:13:08
19:13:08
16:32:52
20:25:46
25:40:50

राशि

मक
तुला
मीन
तुला
तुला
सिंह
सिंह
मक
धनु व
मिथु व
धनु
धनु
तुला

ग्रह

लग्न
सूर्य
चंद्र
मंगल
बुध
गुरु
शुक्र
शनि
राहु व
केतु व
हर्ष
नेप
प्लूटो

राशि

सिंह
कुंभ
कर्क
कुंभ
मक
धनु
मेष
मीन
कन्या
मीन
मक
मक
वृश्चि

अंश

13:56:28
18:23:40
15:50:30
18:50:26
28:21:15
18:11:04
02:10:24
01:46:52
23:50:02
23:50:02
09:00:28
03:03:39
09:18:25

विंशोत्तरी
शनि 1वर्ष 2मा 3दि
शुक्र

06/05/2021

06/05/2041

शुक्र	04/09/2024
सूर्य	04/09/2025
चन्द्र	06/05/2027
मंगल	05/07/2028
राहु	06/07/2031
गुरु	06/03/2034
शनि	06/05/2037
बुध	05/03/2040
केतु	06/05/2041

व - वकी स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

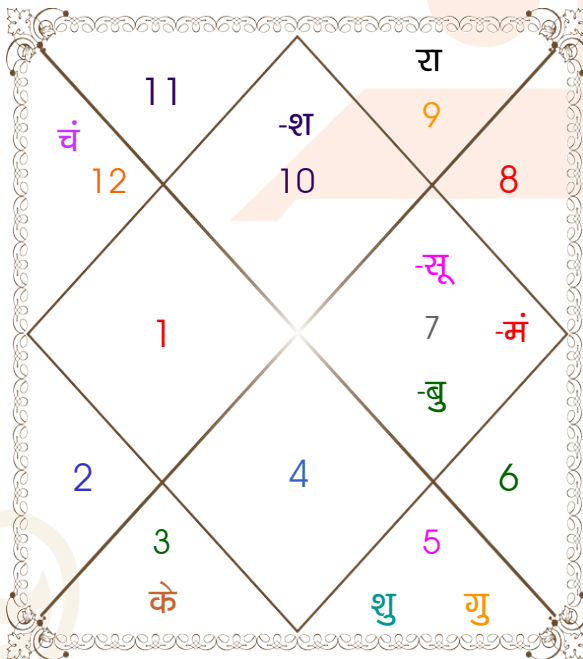
राहु : स्पष्ट

23:44:48

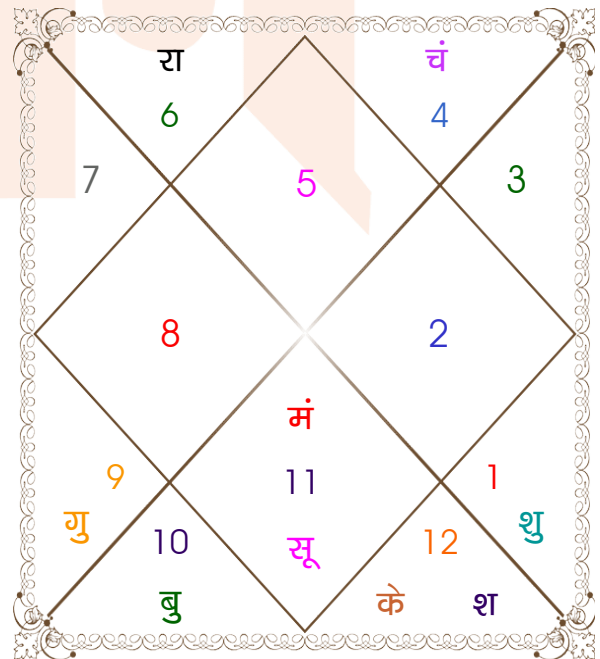
चित्रपक्षीय अयनांश

23:48:20

लग्न-चलित



लग्न-चलित



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अष्टकूट गुण सारिणी

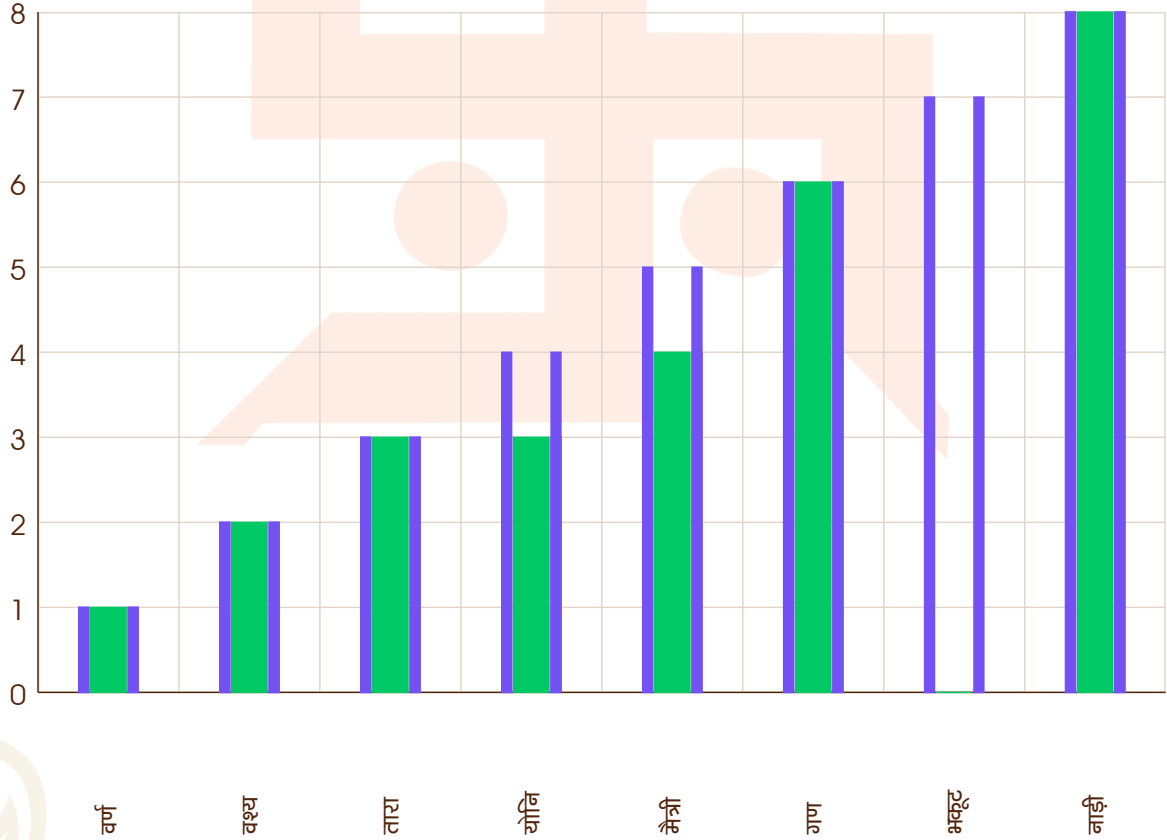
कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गज	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाडी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान

कुल :

36

27.00

कुल : 27 / 36



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतण्भै३ का वर्ग सर्प है तथा डेण टपरंलं का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्भै३ और डेण टपरंलं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्भै३ मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।

डेण टपरंलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

डतण्भै३ तथा डेण टपरंलं में मंगलीक मिलान ठीक नहीं है।

निष्कर्ष

मंगलीक दोष के कारण मिलान ठीक नहीं है।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डतण्भैष् का वर्ण ब्राह्मण तथा डेण टपरंलं का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदर, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

डतण्भैष् का वश्य जलचर है एवं डेण टपरंलं का वश्य भी जलचर है अर्थात् दोनों का वश्य समान ही है। जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों की शारीरिक स्थिति, स्वभाव, पसंद एवं नापसंद एक ही तरह के होंगे। दोनों के बीच अगाध प्रेम एवं सौहार्द बना रहेगा तथा समान दृष्टिकोण, व्यवहार एवं आपसी समझ होने के कारण एक-दूसरे के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होगा कि दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हुए हैं तथा एक-दूसरे के साथ का आनंद लेते रहेंगे। दोनों एक-दूसरे के कामों में मदद करते रहेंगे तथा परिवार की प्रगति एवं समृद्धि में महती योगदान देंगे।

तारा

डतण्भैष् की तारा सम्पत् तथा डेण टपरंलं की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से डतण्भैष् एवं डेण टपरंलं दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। डेण टपरंलं एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

डतण्भैष् की योनि गज है तथा डेण टपरंलं की योनि मेष है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना

रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डतण्भैरव का राशि स्वामी डेण टपरलं के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि डेण टपरलं का राशि स्वामी डतण्भैरव के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

डतण्भैरव का गण देव तथा डेण टपरलं का गण भी देव है। अर्थात् दोनों का गण समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके प्रभाववश दोनों दयालु, सहृदय, मृदु, सौम्य एवं संवेदनशील स्वभाव के होंगे। साथ ही दोनों एक-दूसरे के अति अनुकूल होंगे तथा एक-दूसरे का काफी ख्याल रखने वाले होंगे। ऐसी स्थिति में वैवाहिक संबंध के उपरांत शांति, सुख, खुशहाली एवं समृद्धि हमेशा कदम चूमती रहेगी।

भकूट

डतण्भैरव से डेण टपरलं की राशि पंचम भाव में स्थित है तथा डेण टपरलं से डतण्भैरव की राशि नवम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। दोनों के राशि स्वामियों में परस्पर मित्र होने के कारण नवम-पंचम दोष का परिहार होने के कारण विवाह को स्वीकृति प्रदान की जा सकती है किंतु भकूट मिलान में इसे 0 अंक/गुण प्रदान किया जायेगा। दोनों के बीच सदैव संघर्ष एवं लड़ाई-झगड़े होते रह सकते हैं। जिसके कारण डेण टपरलं को संतानोत्पत्ति में भी समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

नाड़ी

डतण्भैरव की नाड़ी अन्त्य है तथा डेण टपरलं की नाड़ी मध्य है। अर्थात् दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात् यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी

रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

मेलापक फलित

स्वभाव

इतण्भै॒ की राशि जलतत्व युक्त मीन तथा डेण टपरं॒ की राशि भी जलतत्व युक्त कर्क है। अतः दोनों तत्त्वों में समानता होने के कारण इनमें स्वभावगत समानताएं रहेंगी जिससे दाम्पत्य संबंध मधुर होंगे तथा वैवाहिक जीवन भी सुखी रहेगा। अतः मिलान उत्तम रहेगा।

इतण्भै॒ की राशि का स्वामी बृहस्पति तथा डेण टपरं॒ की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर मित्र एवं सम राशियों में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से इनके आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता होगी तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम आकर्षण तथा समर्पण का भाव होगा। साथ ही सुख दुःख में एक दूसरे को पूर्ण रूप से सहायता तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। इतण्भै॒ और डेण टपरं॒ एक दूसरे की मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा सच्चे मित्र की तरह कमियों की उपेक्षा करेंगे। अतः इससे इनका दाम्पत्य जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा समय भी आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

इतण्भै॒ और डेण टपरं॒ की राशियां परस्पर पंचम एवं नवम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा संबंधों में तनाव मतभेद तथा कटुता का भाव रहेगा। साथ ही परस्पर अहंकार एवं श्रेष्ठता की भावना से वैवाहिक जीवन में कटुता की भावना उत्पन्न होगी। अतः यदि इतण्भै॒ और डेण टपरं॒ सामंजस्य की प्रवृत्ति एवं बुद्धिमता से कार्य लें तथा उपरोक्त प्रवृत्तियों की उपेक्षा करें तो इनका जीवन सुखमय हो सकता है।

इतण्भै॒ और डेण टपरं॒ दोनों का वश्य जलचर है। अतः इसके प्रभाव से इनकी अभिरुचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान रहेंगी। साथ ही दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में सफल होंगे जिससे जीवन सुखमय रहेगा।

इतण्भै॒ एवं डेण टपरं॒ का वर्ण ब्राह्मण है। अतः दोनों की कार्य क्षमताएं समान होंगी तथा धार्मिक शैक्षणिक तथा अन्य सत्कार्यों को करने में प्रवृत्त होंगे। अतः इनका कार्य क्षेत्र सुदृढ़ रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

धन

इतण्भै॒ की तारा सम्पत तथा डेण टपरं॒ की तारा अतिमित्र है इसके शुभ प्रभाव से इतण्भै॒ सौभाग्यशाली तथा धनवान व्यक्ति होंगे तथा डेण टपरं॒ के भाग्य से उनकी धन सम्पत्ति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का उनकी आर्थिक स्थिति पर सामान्य प्रभाव रहेगा तथा उससे आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। साथ ही मंगल का भी आर्थिक क्षेत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार वे ऐश्वर्य एवं समृद्धि से युक्त होंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

डतण्भैरव और डेण टपरलं को अनायास धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना रहेगी तथा जीवन में वे समस्त भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। विशेष रूप से डेण टपरलं का शुभ प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर रहेगा तथा सामाजिक स्तर पर भी उनका पूर्ण सम्मान रहेगा।

स्वास्थ्य

डतण्भैरव की नाड़ी अन्य तथा डेण टपरलं की नाड़ी मध्य है। अतः इन पर नाड़ी दोष का कोई प्रभाव नहीं होगा तथा स्वास्थ्य इस ओर से सामान्य रहेगा परन्तु मंगल के प्रभाव से डतण्भैरव का स्वास्थ्य प्रभावित होगा एवं समय समय पर वे हृदय रोग संबंधी परेशानी प्राप्त करेंगे। साथ ही पित या रक्त संबंधी कष्ट की भी अनुभूति होगी। धातु संबंधी रोगों का भी डतण्भैरव पर प्रभाव रहेगा एवं संभोग क्रिया में भी उन्हें शिथिलता का आभास होगा जिससे दाम्पत्य जीवन में कलह तथा अशांति उत्पन्न हो सकती है। अतः उपरोक्त दोषों में न्यूनता लाने के लिए डतण्भैरव को नियमित रूप से हनुमानजी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए। इसके अतिरिक्त मूंगा धारण करना भी डतण्भैरव के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से डतण्भैरव और डेण टपरलं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त डतण्भैरव और डेण टपरलं के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में डेण टपरलं के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन डेण टपरलं को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में डेण टपरलं को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से डतण्भैरव और डेण टपरलं सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमत्ता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार डतण्भैरव और डेण टपरलं का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डेण टपरलं तथा उसकी सास के परस्पर संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। आयु में अधिक

अन्तर होने के कारण इनके गहन मतभेद रहेंगे। लेकिन अन्य कोई भी समस्या इतनी गंभीर नहीं होगी जिनका कोई समाधान न हो। अतः यदि डेण टपरलं धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक सामंजस्यशील प्रवृत्ति का अनुसरण करें तो सास से संबंधों में अनुकूलता आ सकती है। अतः अपनी ओर से उन्हें उनकी पूर्ण रूप से सेवा तथा सुख सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ससुर के साथ डेण टपरलं के संबंध मधुर रहेंगे तथा अपने विनम्र व्यवहार सम्मान की भावना तथा सेवा की प्रवृत्ति से उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में प्रसन्न रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों से संबंधों में प्रतिकूलता रहेगी तथा आपस में ईर्ष्या, प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव रहेगा।

इस प्रकार डेण टपरलं का ससुराल में समय सामान्य रूप से ही व्यतीत होगा तथा अन्य जनों को अपनी ओर से सन्तुष्ट रखने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुराल-श्री

डतण्भै के सास के साथ सामान्यतया अच्छे ही संबंध रहेंगे तथा उनके प्रति इनके मन में सम्मान तथा आदर का भाव सर्वदा विद्यमान रहेगा। सास को वह माता के समान समझेंगे तथा वह भी उन्हें पुत्रवत स्नेह तथा सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही डतण्भै भी समय समय पर ससुराल में आते जाते रहेंगे तथा आपस में श्रेष्ठता के भाव की हमेशा न्यूनता रहेगी।

लेकिन ससुर के साथ में सामान्यतया संबंधों में तनाव रहेगा तथा आयु में पर्याप्त अंतर के कारण वैचारिक मतभेद भी रहेंगे परन्तु यदि दोनों सामंजस्य की प्रवृत्ति का अनुपालन करें तो संबंधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी डतण्भै के संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर स्नेह एवं सहयोग के भाव की न्यूनता रहेगी एवं प्रतिद्वन्दिता का भाव भी विद्यमान रहेगा। इस प्रकार ससुराल पक्ष का दृष्टिकोण डतण्भै के प्रति विशेष उल्लेखनीय नहीं रहेगा।